

9. कविता का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि 'श्री. धर्मवीर भारती' की कविता संग्रह 'सात गीत वर्ष' से चुनी गई 'टूटा पहिया' कविता से ली गई हैं। महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि ने वर्तमान सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए।

कवि रथ का टूटा हुआ पहिया बताने के जैसे कहते हैं कि मैं भले ही रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ, किंतु मुझे अनुपयोगी मानकर मत फेंको। क्योंकि कौरवों से रचित दुरूह चक्रव्यूह में अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ दुस्साहस के साथ अभिमन्यु आकर घिर जाएगा। यानी जीवन की विषमताएँ रूपी चक्रव्यूह में शोषण की अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ कोई शोषित मनुष्य अभिमन्यु के समान आ जाए तो मैं, टूटा पहिया उसका सहारा हो जाऊँगा। कौरव पक्ष के बड़े-बड़े महारथी लोग अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी अकेली निरायुध आवाज़ यानी अभिमन्यु को अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहते हैं। चक्रव्यूह में फँस गए अभिमन्यु पर कौरव पक्ष टूट पड़ने पर रथ का टूटा पहिया रूपी मैं कौरव पक्ष के बड़े-बड़े महारथी लोगों के ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ। शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति से आम जनता की आवाज़ और ज़रूरतों को कुचल देते वक्त मानव मूल्यों की सहायता से हम उस शोषण से बच पाएँ। टूटा पहिया फिर भी अपने महत्व की याद दिलाती है कि मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ, लेकिन मुझे नहीं फेंकना। इतिहास की सामूहिक गति सत्य और धर्म को छोड़कर असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगती है। उस समय सत्य के पक्ष, आम जनता को अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हुआ पहिया यानी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पड़ेगा। यानी समाज में शोषण और असमत्व बढ़ते वक्त आम जनता को मानवीय मूल्यों का सहारा लेना पड़ता है।

मानवीय मूल्यों की शक्ति व्यक्त करनेवाली यह कविता हर तरह से बिल्कुल प्रासंगिक तथा अच्छी है। कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है।

12. गंगी और जोखू के बीच हुए वार्तालाप (अंतिम भाग)

गंगी – अरे ! आप यह क्या कर रहे हैं ?

जोखू – फिर मैं क्या करूँ ? प्यास के मारे गला सूख गया है।

गंगी – लेकिन वह बदबूदार पानी है न ? आप की बीमारी बढ़ जाएगी तो ?

जोखू – और मैं क्या करूँ ? तू साफ पानी लाने गई थी न ? मिल गया ?

गंगी – नहीं।

जोखू – फिर इतनी देर तक कहाँ थी ?

गंगी – मैं ठाकुर के कुएँ से पानी ले रही थी।

जोखू – फिर क्या हुआ ?

गंगी – इसी बीच ठाकुर ने मुझे देखा और मैं जान बचाकर भाग गयी।

जोखू – मैंने पहले ही कहा था न ?

गंगी – अब क्या होगा ? भगवान ही जाने !

जोखू – ठीक है। अब लेटकर सो जाओ।

9. कविता का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि 'श्री. धर्मवीर भारती' की कविता संग्रह 'सात गीत वर्ष' से चुनी गई 'टूटा पहिया' कविता से ली गई हैं। महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि ने वर्तमान सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए।

कवि रथ का टूटा हुआ पहिया बताने के जैसे कहते हैं कि मैं भले ही रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ, किंतु मुझे अनुपयोगी मानकर मत फेंको। क्योंकि कौरवों से रचित दुरुह चक्रव्यूह में अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ दुस्साहस के साथ अभिमन्यु आकर घिर जाएगा। यानी जीवन की विषमताएँ रूपी चक्रव्यूह में शोषण की अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ कोई शोषित मनुष्य अभिमन्यु के समान आ जाए तो मैं, टूटा पहिया उसका सहारा हो जाऊँगा। कौरव पक्ष के बड़े-बड़े महारथी लोग अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी अकेली निरायुध आवाज़ यानी अभिमन्यु को अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहते हैं। चक्रव्यूह में फँस गए अभिमन्यु पर कौरव पक्ष टूट पड़ने पर रथ का टूटा पहिया रूपी मैं कौरव पक्ष के बड़े-बड़े महारथी लोगों के ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ। शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति से आम जनता की आवाज़ और ज़रूरतों को कुचल देते वक्त मानव मूल्यों की सहायता से हम उस शोषण से बच पाएँ। टूटा पहिया फिर भी अपने महत्व की याद दिलाती है कि मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ, लेकिन मुझे नहीं फेंकना। इतिहास की सामूहिक गति सत्य और धर्म को छोड़कर असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगती है। उस समय सत्य के पक्ष, आम जनता को अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हुआ पहिया यानी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पड़ेगा। यानी समाज में शोषण और असमत्व बढ़ते वक्त आम जनता को मानवीय मूल्यों का सहारा लेना पड़ता है।

मानवीय मूल्यों की शक्ति व्यक्त करनेवाली यह कविता हर तरह से बिल्कुल प्रासंगिक तथा अच्छी है। कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है।

12. गंगी और जोखू के बीच हुए वार्तालाप (अंतिम भाग)

गंगी – अरे ! आप यह क्या कर रहे हैं ?

जोखू – फिर मैं क्या करूँ ? प्यास के मारे गला सूख गया है।

गंगी – लेकिन वह बदबूदार पानी है न ? आप की बीमारी बढ़ जाएगी तो ?

जोखू – और मैं क्या करूँ ? तू साफ पानी लाने गई थी न ? मिल गया ?

गंगी – नहीं।

जोखू – फिर इतनी देर तक कहाँ थी ?

गंगी – मैं ठाकुर के कुएँ से पानी ले रही थी।

जोखू – फिर क्या हुआ ?

गंगी – इसी बीच ठाकुर ने मुझे देखा और मैं जान बचाकर भाग गयी।

जोखू – मैंने पहले ही कहा था न ?

गंगी – अब क्या होगा ? भगवान ही जाने !

जोखू – ठीक है। अब लेटकर सो जाओ।

9. कविता का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि 'श्री. धर्मवीर भारती' की कविता संग्रह 'सात गीत वर्ष' से चुनी गई 'टूटा पहिया' कविता से ली गई हैं। महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि ने वर्तमान सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए।

कवि रथ का टूटा हुआ पहिया बताने के जैसे कहते हैं कि मैं भले ही रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ, किंतु मुझे अनुपयोगी मानकर मत फेंको। क्योंकि कौरवों से रचित दुर्योधन चक्रव्यूह में अश्वहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ दुस्साहस के साथ अभिमन्यु आकर घिर जाएगा। यानी जीवन की विषमताएँ रूपी चक्रव्यूह में शोषण की अश्वहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ कोई शोषित मनुष्य अभिमन्यु के समान आ जाए तो मैं, टूटा पहिया उसका सहारा हो जाऊँगा। कौरव पक्ष के बड़े-बड़े महारथी लोग अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी अकेली निरायुध आवाज़ यानी अभिमन्यु को अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहते हैं। चक्रव्यूह में फँस गए अभिमन्यु पर कौरव पक्ष टूट पड़ने पर रथ का टूटा पहिया रूपी मैं कौरव पक्ष के बड़े-बड़े महारथी लोगों के ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ। शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति से आम जनता की आवाज़ और ज़रूरतों को कुचल देते वक्त मानव मूल्यों की सहायता से हम उस शोषण से बच पाएँ। टूटा पहिया फिर भी अपने महत्व की याद दिलाती है कि मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ, लेकिन मुझे नहीं फेंकना। इतिहास की सामूहिक गति सत्य और धर्म को छोड़कर असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगती है। उस समय सत्य के पक्ष, आम जनता को अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हुआ पहिया यानी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पड़ेगा। यानी समाज में शोषण और असमत्व बढ़ते वक्त आम जनता को मानवीय मूल्यों का सहारा लेना पड़ता है।

मानवीय मूल्यों की शक्ति व्यक्त करनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है। कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है।

12. गंगी और जोखू के बीच हुए वार्तालाप (अंतिम भाग)

गंगी – अरे ! आप यह क्या कर रहे हैं ?

जोखू – फिर मैं क्या करूँ ? प्यास के मारे गला सूख गया है।

गंगी – लेकिन वह बदबूदार पानी है न ? आप की बीमारी बढ़ जाएगी तो ?

जोखू – और मैं क्या करूँ ? तू साफ पानी लाने गई थी न ? मिल गया ?

गंगी – नहीं।

जोखू – फिर इतनी देर तक कहाँ थी ?

गंगी – मैं ठाकुर के कुएँ से पानी ले रही थी।

जोखू – फिर क्या हुआ ?

गंगी – इसी बीच ठाकुर ने मुझे देखा और मैं जान बचाकर भाग गयी।

जोखू – मैंने पहले ही कहा था न ?

गंगी – अब क्या होगा ? भगवान ही जाने !

जोखू – ठीक है। अब लेटकर सो जाओ।

12. गंगी और जोखू के बीच हुए वार्तालाप (अंतिम भाग)

गंगी – अरे ! आप यह क्या कर रहे हैं ?

जोखू – फिर मैं क्या करूँ ? प्यास के मारे गला सूख गया है ।

गंगी – लेकिन वह बदबूदार पानी है न ? आप की बीमारी बढ़ जाएगी तो ?

जोखू – और मैं क्या करूँ ? तू साफ पानी लाने गई थी न ? मिल गया ?

गंगी – नहीं ।

जोखू – फिर इतनी देर तक कहाँ थी ?

गंगी – मैं ठाकुर के कुएँ से पानी ले रही थी ।

जोखू – फिर क्या हुआ ?

गंगी – इसी बीच ठाकुर ने मुझे देखा और मैं जान बचाकर भाग गयी ।

जोखू – मैंने पहले ही कहा था न ?

गंगी – अब क्या होगा ? भगवान ही जाने !

जोखू – ठीक है । अब लेटकर सो जाओ ।

9. कविता का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि 'श्री. धर्मवीर भारती' की कविता संग्रह 'सात गीत वर्ष' से चुनी गई 'टूटा पहिया' कविता से ली गई हैं । महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि ने वर्तमान सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है । इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए ।

कवि रथ का टूटा हुआ पहिया बताने के जैसे कहते हैं कि मैं भले ही रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ, किंतु मुझे अनुपयोगी मानकर मत फेंको । क्योंकि कौरवों से रचित दुरुह चक्रव्यूह में अश्वहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ दुस्साहस के साथ अभिमन्यु आकर घिर जाएगा । यानी जीवन की विषमताएँ रूपी चक्रव्यूह में शोषण की अश्वहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ कोई शोषित मनुष्य अभिमन्यु के समान आ जाए तो मैं, टूटा पहिया उसका सहारा हो जाऊँगा । कौरव पक्ष के बड़े-बड़े महारथी लोग अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी अकेली निरायुध आवाज़ यानी अभिमन्यु को अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहते हैं । चक्रव्यूह में फँस गए अभिमन्यु पर कौरव पक्ष टूट पड़ने पर रथ का टूटा पहिया रूपी मैं कौरव पक्ष के बड़े-बड़े महारथी लोगों के ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ । शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति से आम जनता की आवाज़ और ज़रूरतों को कुचल देते वक्त मानव मूल्यों की सहायता से हम उस शोषण से बच पाएँ । टूटा पहिया फिर भी अपने महत्व की याद दिलाती है कि मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ, लेकिन मुझे नहीं फेंकना । इतिहास की सामूहिक गति सत्य और धर्म को छोड़कर असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगती है । उस समय सत्य के पक्ष, आम जनता को अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हुआ पहिया यानी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पड़ेगा । यानी समाज में शोषण और असमत्व बढ़ते वक्त आम जनता को मानवीय मूल्यों का सहारा लेना पड़ता है ।

मानवीय मूल्यों की शक्ति व्यक्त करनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है । कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है ।